बाशो और नदी के पत्थर

लेखनः टिम मेयर्स

चित्रः ओकी एस. हान

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बाशो और नदी के पत्थर

लेखनः टिम मेयर्स

चित्रः ओकी एस. हान

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मात्सुओ बाशो को, उनके जीवन और कार्य के लिए जिसने मेरे जीवन को समृद्ध किया; मेरी उदार दिल पत्नी को, जिसने हमें बाशो के नाम पर जाम उठाने की प्रेरणा दी; और कैसी को जिसने मुझे इस क़िताब के शीर्षक का तोहफ़ा दिया।

- टी.एम.

मेरे मित्रों को, मुझ में और मेरी कला में सतत् विश्वास जताने के लिए।

- ओ.एस.एच.

हाइकू तीन पंक्तियों और सत्रह शब्दाशों (सिलेबल) की छोटी कविता होती है, जिसका आविष्कार महान कवि बाशो ने किया और उसे निखारा। हाइकू आज भी जापान और विश्व भर में लोकप्रिय है।

मात्सुओ बाशो जापान के सबसे जाने-माने कवि हैं। पर यह किस्सा कम ही लोग जानते हैं कि वे फुकागावा की लोमड़ियों के आजीवन मित्र कैसे बने।

जब बाशो पहले-पहल फूका नदी के तट पर रहने आए, उन्हें अपनी कुटिया के पास अपनी ज़मीन पर एक चैरी का पेड़ मिला और वे चैरी फल लोमड़ियों के साथ मिल-बांट कर खाने को तैयार हो गए।

एक अर्से से तक सब कुछ शान्ति से चला;
बाशो और लोमड़ियों के बीच खासा 'वा' यानी सामन्जस्य था।

पर तब लोमड़ी कुनबे के कुछ सदस्य अधीर होने लगे और उनका लालच बढ़ने लगा। एक नौजवान लोमड़ को चैरी के फल खास तौर से पसन्द थे। सो उसने कवि पर एक चाल चलने की सोची।

जापानी लोमड़ियों में कमाल की जादूगरी होती है; वे खास तौर से चीज़ों का और अपना रूप बदलने में माहिर होती हैं। सो इस युवा लोमड़ ने एक 'यामाबुशी' यानी सन्यासी का रूप धरा ...

और नदी से तीन पत्थर उठाए।

उन पत्थरों को उसने सोने
के सिक्कों में बदल डाला।

लोमड़ जानता था कि बाशो निहायत ग़रीब हैं। सो वह कवि की छोटी-सी कुटिया के पास पहुँचा और बाशो को बाहर धूप में बैठ पढ़ते देखा। उसने अपनी सबसे बढ़िया सन्यासी आवाज़ में कहा, "एक सौदागर ने मुझे ये सिक्के दिए थे, मैं इनसे कुछ अच्छा काम करना चाहता हूँ। मैंने ग़ौर किया है कि यहाँ की लोमड़ियाँ बेहद भूखी लगती हैं। अगर मैं आपको ये सिक्के दे दूँ, तो क्या आप करारनामे के एक कागज़ पर दस्तख़त कर देंगे जो कहता हो कि आपके उम्दा पेड़ के सारी चैरी फल सिर्फ़ लोमड़ियों के लिए हैं?"

बाशो ख़ुद भी काफ़ी भूखे थे। उनके पास पैसों की किल्ल्त भी थी, क्योंकि वे अपना सारा समय लिखने में, जंगलों और खेत-खलिहानों में भटकने में बिताते थे। इसके अलावा हालांकि चैरी फल स्वादिष्ट थे, वे साल में सिर्फ़ एक ही बार लगते थे। सो बाशो मान गए। उन्होंने सिक्के सावधानी से अपनी चौकी पर रखे और खुशख़ती का ब्रश उठाया और एक कागज़ पर वह करारनामा लिख दिया जो सन्यासी रूपी लोमड़ ने सुझाया था। और उस पर दस्तख़त भी कर दिए।

अपना काम साध सन्यासी हंसता-मुस्कुराता अपनी राह चल दिया।

अगली सुबह युवा लोमड़ गुपचुप बाशो की कुटिया पर जाने को आतुर था; वह यह देखना चाहता था कि जादू उतरने के बाद जब सिक्के पत्थरों में बदल जाएंगे तो बाशो कितना परेशान और नाराज़ होंगे!

पर जब उसने कुटिया की खिड़की से अन्दर झांका तो बाशो को लिखते पाया। उनके चेहरे पर मुस्कान थी और नदी के तीन पत्थर उनकी चौकी पर उनके सामने धरे थे। वह पशोपेश में पड़ गया। अचानक बाशो को खिड़की से लोमड़ के कान दिखाई दिए।

"ओह, कित्सूने!" (लोक-कथाओं की फॉक्स स्पिरिट/लोमड़ी-आत्मा) बाशो ने खुशी से उमगते कहा, "ज़रा देखो तो मेरी किस्मत कितनी अच्छी रही।" जिज्ञासा से भर लोमड़ कुटिया का चक्कर लगा दरवाज़े से अन्दर आया।

"कल एक सन्यासी मेरे पास आया था," बाशो ने कहना शुरू किया। "उसने मुझे सोने के तीन सिक्के दिए ताकि मैं सारी चैरी आप लोमड़ियों के लिए छोड़ दूँ। पर उस सन्यासी को किसी लोमड़ी ने छकाया होगा, क्योंकि वे असली सिक्के थे ही नहीं। आज सुबह वे नदी के पत्थरों में बदल गए। ज़रा देखो तो ये कितने खूबसूरत हैं!" कवि ने नदी में गोल व चिकने हो चुके पत्थरों में से एक को उठा कर, उसकी चिकनी सतह और सुन्दर रंगों को प्रशंसा की नज़रों से देखते हुए कहा।

"पहले तो मैं सोने को खो नाराज़ और हताश हुआ," बाशो ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा। "पर यह मेरी बेवकूफ़ी थी। जब मैंने उन्हें और सावधानी से देखा मैं समझ गया - और मुझे एक सुन्दर कविता सूझ आई!"

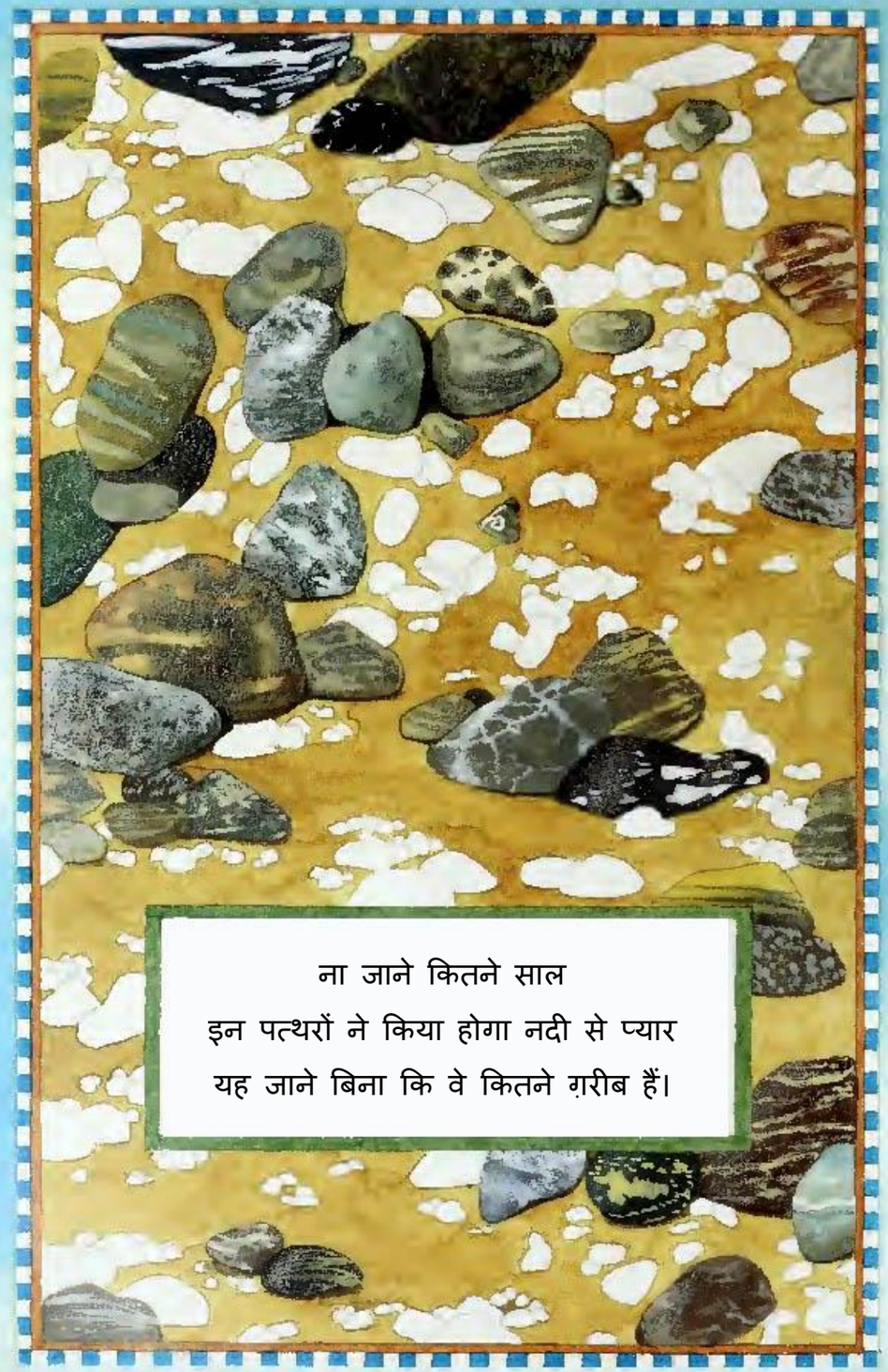

युवा लोमड़ ने जब यह सुना तो वह अचरज़ में पड़ गया। उसे अचानक बड़ी शर्म आई।

"उस्ताद!" लोमड़ ने दुख से भर कहा,"मुझे माफ़ करें! मैंने ही सन्यासी का रूप धर आपको छकाया था - पर आप वह बात समझ गए जो सचमें ज़रूरी है! मुझे भी याद रखना चाहिए था कि कुछ चीज़ें सोने से ज़्यादा कीमती होती हैं।"

बाशो कुछ चौंके, पर तब सिर हिलाया। "एक अच्छी कविता सोने-चाँदी से अधिक कीमती होती है, और कहीं ज़्यादा समय टिकती भी है," वे बोले। "मेरे साथ ईमानदारी बरतने के लिए शुक्रिया, कित्सुने!"

"मुझे यह पाठ सिखाने के लिए शुक्रिया," लोमड़ ने आदर से झुक कहा। और वहाँ से चला गया।

वह भारी दिल से अपनी माँद में लौटा। अकेले बैठ वह सोचने लगा कि शुक्रगुज़ारी के इस कर्ज़ को वह कैसे उतार सकेगा।

तब उसे कुछ याद आया - उसने इनारी मन्दिर में पत्थर से गढ़े लालटेन के नीचे तीन रीयो छिपाए थे। ये सोने के सिक्के थे - असली। उनसे कवि पूरी सर्दियों के लिए खाने-पीने का सामान ख़रीद सकता था।

लोमड़ ने उन्हें खोद निकाला और बाशो की कुटिया में पहुँचा।

"उस्ताद!" उसने गंभीर आवाज़ में कहा, मुझे वह करारनामा फाड़ने की इजाज़त दें जिस पर आपने दस्तख़त कर सारे चैरी फल लोमड़ियों के नाम कर दिए थे। मैंने आपके साथ धोखा किया था, इसलिए उस करारनामे की कोई बाध्यता नहीं मानी जानी चाहिए।"

पर बाशो कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे। "मैं तुम्हें यह नहीं करने दे सकता," बाशो ने कहा। "हाँ मैं तुम्हारी क्षमा-याचना को स्वीकारता हूँ। पर मैंने करानामे पर दस्तख़त कर दिए हैं। सो अब यह ढोंग करना अनैतिक होगा कि मैंने ऐसा किया ही नहीं है।"

"तो फिर मुझे कम से कम उन चैरी फलों की क़ीमत अदा करने दें!" लोमड़ ने आग्रह करते हुए बाशो को सोने के सिक्के दिखाए और आश्वासन दिया कि वे असली हैं।

"आह, कित्सुने! - मैं परेशानियाँ खड़ी नहीं करना चाहता पर तुमने चैरी फलों की कीमत चुका दी है। जो नदी के पत्थर तुमने दिए थे वे बेहद खूबसूरत थे और उन्होंने मुझे एक कविता रचने में मदद की। यही काफ़ी है। मेरा आत्म-सम्मान किसीका दान स्वीकारने नहीं देगा, मेरे दोस्त।"

लोमड़ फिर से अपराध-बोध और उलझन से लदा लौट गया।

वह जंगल से निकल फूका नदी के किनारे धीमे-धीमे बढ़ रहा था। उसकी गरदन शर्म से झुकी हुई थी। तभी अचानक उसकी नज़र नदी की सतह के नीचे पड़ी।

वहाँ अनेक सुन्दर नदी पत्थर दिख रहे थे। अचानक उसने अपना सिर उठाया। “मुझे पता है मुझे क्या करना चाहिए!” उसने ख़ुद से कहा।

अगले दिन वह बाशो की कुटिया में एक छोटी-सी झोली के साथ गया। लोमड़ को देख बाशो की भौं तन गई। क्या यह ढ़ीठ जीव फिर से सिक्के देने आया है?

"उस्ताद," लोमड़ ने नीचे तक झुक कर कहा, "आपने जो कुछ कहा उस पर मैंने सोचा और अब मैं बात समझता भी हूँ। सो आज मैं आपके लिए दान नहीं तोहफ़ा लाया हूँ, ताकि अपना आभार जता सकूँ।" इतना कह उसने अपनी झोली पलट दी। उसमें से तीन सुडौल और सुन्दर नदी के पत्थर लुढक कर निकले।

बाशो के चेहरे पर मुस्कान उभर आई। "आह कित्सुने!" वे बोले। "बिल्कुल सही तोहफ़ा है। हाँ, मैं इन्हें स्वीकारता हूँ। शायद ये भी मुझे एक कविता की प्रेरणा दें। शुक्रिया, तुम सचमें मेहरबान हो।"

लोमड़ अपनी खुशी छुपा न सका; पर तब हिचकिचाते हुए बोला, "तो ... आप मेरे ताहफ़े को स्वीकार करने का वादा करते हैं, हैं ना?"

"बेशक," बाशो ने उसके सिर पर हाथ फिराते हुए कहा।

"ओह, उस्ताद!" लोमड़ बोला, "मैं बेहद खुश हूँ!" इतना कह वह वहाँ से सटक लिया।

उस रात सोने की चटाई पर लेटने के पहले बाशो ने अपने तीन नए नदी पत्थरों को देखा। तब मुस्कुरा कर अपनी मोमबत्ती बुझा दी।

अगले दिन वे सूरज के साथ उठे, अंगड़ाई ली - तब हठात् रुक गए। क्योंकि उनकी चौकी पर तीन सोने के सिक्के खिड़की से आती रोशनी में दमक रहे थे!

बाशो चौकी की ओर बढ़े, हरेक सिक्के को उठाया, ठीक से छुआ और देखा। उन्हें भरोसा हो गया कि वे सचमें असली सिक्के थे।

बारीकी से देखने पर उन्हें पता चल गया कि ये वे ही सिक्के थे जो लोमड़ उन्हें पहले देना चाहता था!

तब वे समझ गए - और ठठा कर हंस पड़े। वे नदी के पत्थर थे ही नहीं। लोमड़ ने उन्हें एक बार फिर से छका दिया था।

"कितना चतुर है कित्सुने!" कवि ने खुद से कहा। "वह जानता है कि वादा करने के बाद मुझे उसे निभाना ही होगा - चाहे उसने वह वादा छल से ही क्यों न करवाया हो।" सो बाशो ने सिक्के उठाए, और यह समझ शुकराना अदा करने की प्रार्थना की कि अब वे सर्दियों के लिए खाना ख़रीद सकेंगे।

यह सोच कि लोमड़ आस-पास ही होगा वे उसे बुलाने बाहर निकले। पर उन्हें कुटिया की दीवार पर चिपका हुआ एक कागज़ भर मिलाः

प्यारे उस्ताद जी,

तोहफ़ा स्वीकराने का वादा करने के लिए शुक्रिया। जैसे पहले नदी के पत्थरों ने आपको एक हाइकू लिखने की प्रेरणा दी थी, इन पत्थरों ने मुझे भी प्रेरित किया है ...

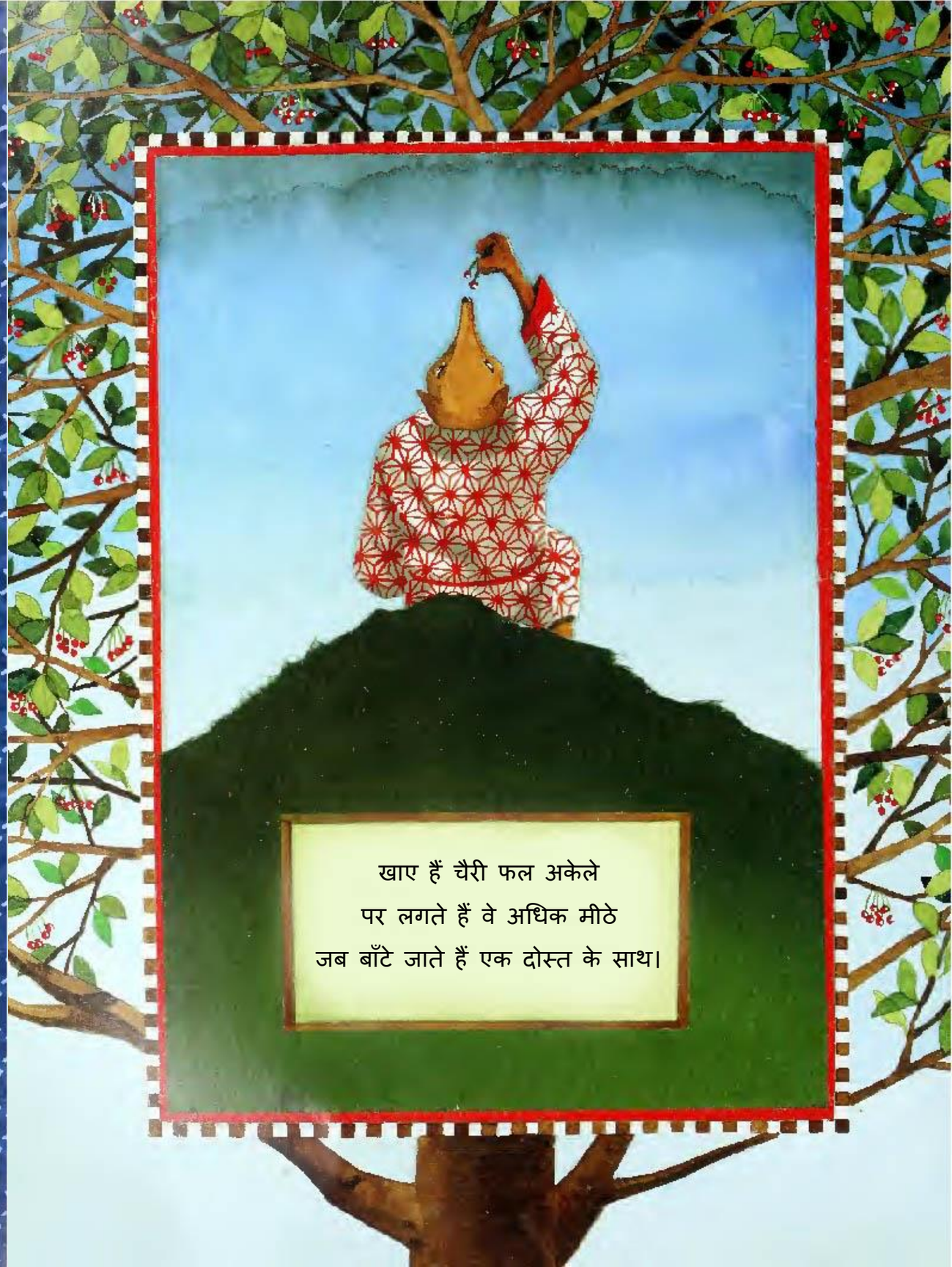

खाए हैं चैरी फल अकेले
पर लगते हैं वे अधिक मीठे
जब बाँटे जाते हैं एक दोस्त के साथ।

"आह, कित्सुने!" बाशो ने सोचा।

उस दिन से बाशो और लोमड़ियाँ पहले की तरह चैरी फल और कई दूसरी चीज़ें भी, मिल-बाँट कर खाने लगे।

लेखक की कलम से

हालांकि उनका जन्म चार सौ बरस पहले हुआ था, बाशो अब भी जापान के सबसे सम्मानित कवि हैं। उन्होंने अपना जीवन सादगी व आध्यात्मिकता से, और लगातार यात्राएं करते बिताया। यह सब उनके लेखन में भी अभिव्यक्त होता है। उन्होंने हाइकू कहलाने वाली छोटी कविता को वह सुन्दर रूप दिया, जिसमें हम आज उसे देखते हैं।

बाशो का जीवन पूर्णता से देखने, सूँघने, चखने, महसूस करने, सुनने, सोचने-विचारने, और सबका आनन्द लेने में गुज़रा। हाइकू की ताक़त इस दुनिया का और उसमें जो कुछ भी है उसका सटीक अवलोकन करने में निहित है - ताकतवर और कमज़ोर, बड़ा और छोटा, नाटकीय और अक्सर उपेक्षित। बाशो हमें सिखाते हैं कि वास्तविक समझ तब शुरू होती है जब हम कुछ भी पहले से धार कर नहीं चलते। यह कहानी इसी विचार को अनुगुंजित करती है।

मेरी बेटी ने इस पुस्तक का शीर्षक सुझाया - मुझे यह अहसास होने में समय लगा कि नदी के पत्थरों पर बल देना बिलकुल सटीक था (कहानी बेशक मैंने लिखी थी, पर बाशो की तरह वह सोच रही थी, जबकि मैं अज्ञानी लोमड़-सा था)। बाशो भी नदी के पत्थरों को पहले नहीं 'देखते' हैं, अपने सरोकारों में उलझे रहते हैं - पर तब उन्हें जो मिलता है उसकी असली क़ीमत समझ पाते हैं। यही बाद में लोमड़ के साथ भी होता है। हम दुनिया के नदी पत्थरों जैसी साधारण चीज़ों की क़ीमत को अमूमन देख-समझ नहीं पाते, दुनिया की चमक-दमक से अंधे बने रहते हैं।

मुझे यह भी जोड़ देना चाहिए कि हालांकि इस कहानी में लोक-कथा के कुछ तत्व हैं, यह कहानी मेरी अपनी है; इसमें शामिल दोनों हाइकू समेत। मैं उन्हें पूरे उल्लास और विनम्रता के साथ बाशो की स्मृति को अर्पित करता हूँ। क्योंकि मुझ पर भी 'ओनगाएशी' यानि कृतज्ञता का कर्ज़ है, जिसे मैं कभी पूरी तरह चुका नहीं सकता।

- टिम मेयर्स